मुंशी प्रेमचंद का निबंध

महाजनी सभ्यता

डॉ. राजेन्द्र सिंह
आचार्य, हिन्दी विभाग
महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय
मोतिहारी, बिहार
स्नातक प्रतिष्ठा हिन्दी छठा सेमेस्टर
पाठ्यक्रम प्रेमचंद

मुंशी प्रेमचंद का जीवनकाल

31 जुलाई 1880 – 8 अक्तूबर 1936

- यह समय भारत में अंग्रेजों की गुलामी का समय था।
- लेखकों और सृजनकर्मियों पर अंगेजों की विशेष निगाह रहती थी।
- मुंशी प्रेमचंद की 'सोजेवतन' कहानी संग्रह को जब्त भी कर लिया गया था।
- इसका बड़ा कारण यही था कि इस संग्रह की कहानियों के पात्र स्वतंत्रता आंदोलन के लिए जनमानस का निर्माण करने की भूमिका निभा रहे थे।

मुंशी प्रेमचंद हिन्दी साहित्य में आधुनिक काल के एक अति महत्त्वपूर्ण साहित्यकार हैं। उन्होंने कहानी, उपन्यास, निबंध एवं आलोचना में बेहतरीन साहित्य की रचना की है।

लगभग 300 कहानियां लिखी। जो मानसरोवर के 8 भागों में संकलित हैं।

बड़े घर की बेटी, नमक का दरोगा, सत्याग्रह, कफन, शतरंज के खिलाड़ी, पंच परमेश्वर, बूढ़ी काकी, नशा, सवा सेर गेहूं, पूस की रात इनकी सुप्रसिद्ध कहानियां हैं।

प्रेमचंद को 'कथा सम्राट' और 'उपन्यास सम्राट' भी कहा जाता है।

मुंशी प्रेमचंद के मुख्य उपन्यास निम्न प्रकार हैं –

कर्मभूमि, निर्मला, गबन, गोदान, रंगभूमि, प्रतिज्ञा, प्रेमा, प्रेमाश्रम, सेवासदन, कायाकल्प

‘मंगलसूत्र’ अधूरा उपन्यास
‘दुर्गादास’ एक बालोपयोगी उपन्यास

यह निबंध सत्यप्रकाश मिश्र जी द्वारा संपादित 'प्रेमचंद के श्रेष्ठ निबंध' में संकलित है।

- महाजनी सभ्यता निबंध मुंशी प्रेमचंद जी का एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण निबंध है।
- इस निबंध में प्रेमचंद जी ने महाजनी सभ्यता को सबसे क्रूर सभ्यता माना है।
- इस निबंध को उनके अमृतराय ने उनके कुल साहित्य का वैचारिक वसीयतनाम भी कहा है।
- 'महाजनी सभ्यता' को पूंजीवाद का भारतीय रूप या संस्करण कह सकते हैं।
- भारत के तेज होते स्वतंत्रता संग्राम में मुंशी प्रेमचंद भरतीय समाज में व्याप्त महाजनी संस्कार से बहुत अधिक चिंतित थे।
- वे सोचते थे कि यदि राजनीतिक आजादी मिल भी गई तो भी महाजनी संस्कार के चलते भारतीय अधिक खुशहाल नहीं होंगे।

मुंशी प्रेमचंद ने इस निबंध में जागीरदारी सभ्यता और राजतंत्र या राजशाही से भी अधिक खतरनाक माना है जिसने तमाम मानवीय गुणों को लील लिया। महाजनी सभ्यता में केवल पैसा ही प्रमुख होता है। पैसे से ही आदमी का मूल्यांकन होता है।

उन्होंने निबंध में लिखा है –

‘‘मगर इस महाजनी सभ्यता में सारे कामों की गरज महज पैसा होती है। कसी देश पर राज्य कया जाता है, तो इस लए क महाजनों, पूँजीपतियों को ज़्यादा से ज़्यादा नफ़ा हो। इस दृष्टि से मानों आज दुनिया में महाजनों का ही राज्य है। मनुष्य समाज दो भागों में बँट गया है। बड़ा हिस्सा तो मरने और खपने वालों का है, और बहुत ही छोटा हिस्सा उन लोगों का, जो अपनी श कत और प्रभाव से बड़े समुदाय को अपने बस में कये हुए हैं। ’’

मुंशी प्रेमचंद कहते हैं कि धन ही समाज में व्यक्ति के आंकलन का माध्यम बन गया है।

धन ही आदमी आदर-अनादर का कारण बनता है।

धन ने मानवीय गुणों को दोयम दर्जे का बना कर रख दिया है।

ज्ञान, गुण और गौरव सब धन के आधार पर ही आंका जाता है।

उन्होंने इस निबंध में लिखा -

‘‘धन-लोभ ने मानव भावों को पूर्ण रूप से अपने अधीन कर लया है। कुलीनता और शराफ़त, गुण और कमाल की कसौटी पैसा, और केवल पैसा है। जिसके पास पैसा है, वह देवता स्वरूप है, उसका अन्त:करण कतना ही काला क्यों न हो। साहित्य, संगीत और कला-सभी धन की देहली पर माथा टेकने वालों में है। यह हवा इतनी ज़हरीली हो गई है क इसमें जी वत रहना कठिन होता जा रहा है डाक्टर और हकीम है क वह बिना लम्बी फ़ीस लये बात नहीं करता। वकील और बारिस्टर है क वह मनटों को अश र्फयों से तौलता है। ’’

मुंशी प्रेमचंद ने जीवन में धन की महत्ता को स्वीकार जरूर किया है परंतु वे इसे इतना अधिक महत्त्व भी नहीं देते कि यह मानवीय संवेदनाओं से भी बड़ा हो जाए। उनका मानना है –

- धन कभी भी मानवीय संबंधों की स्वाभाविकता में आड़े न आए।
- धन ही मनुष्य के मूल्यांकन का आधार न हो।
- मनुष्य अपने जीवन की नैसर्गिकता को प्रकृति अनुसार सुख-दुख, हंसी-खुशी और प्राकृतिक जीवन की स्वाभाविकता के अनुसार ही व्यतीत करे।
- जिस दिन मानव अपने संबंधों को पैसे के आधार पर देखना शुरू कर देगा उसी दिन से उसका पतन शुरू हो जाएगा।
- आदमी को जीवन की स्वाभाविकता और धन की उपयोगिता में संतुलन बनाकर चलना होगा।
- निबंध में वे लिखते हैं –

"इसका अर्थ यह नहीं क व्यर्थ की गपशप में समय नष्ट कया जाय, पर यह अर्थ अवश्य है क धन- लप्सा को इतना बढ़ने न दिया जाय क वह मनुष्यता, मत्रता, स्नेह-सहानुभूति सबको निकाल बाहर करे।"

प्रेमचंद ने इस पूंजीवादी सभ्यता के तीन सिद्धांत बताए हैं –

1. समय ही धन है।
2. बिज़नेस इज बिज़नेस
3. व्यक्तिवाद

बिज़नेस इज बिज़नेस वाले सिद्धांत की क्रूरता के बारे में प्रेमचंद लिखते हैं –

"इस महाजनी सभ्यता ने दुनिया में जो नई रीति-नीतियाँ चलाई हैं, उनमें सबसे अधिक और रक्त पपासु यही व्यवसाय वाला सद्धान्त है। मयाँ-बीवी में बिजनेस, बाप-बेटे में बिजनेस, गुरु- शष्य में बिजनेस। सारे मानवी आध्यातिमक और सामाजिक नेह-नाते समाप्त। आदमी-आदमी के बीच बस कोई लगाव है, तो बिजनेस का। लानत है इस 'बिजनेस' पर।"

प्रेमचंद के अनुसार यह महाजनी सभ्यता गांव के छोटे सूदखोर से लेकर सत्तओं के प्रकारों तक में देखने में मिलती है।
परंतु इससे मानवता आहत होती है।
यह मानव के श्रम का शोषण करती है और केवल कुछ लोगों को ही धनाढय बनाती है।
पूरे विश्व के चिंतक इससे चिंतित हैं।
प्रेमचंद साम्यवाद में इस समस्या का हल देखते हैं।
वे पश्चिम में उदय हो रहे साम्यवाद से गहरे आश्वस्त हैं।
वे लिखते हैं –

‘‘परन्तु अब एक नई सभ्यता का सूर्य सुदूर पश्चिम में उदय हो रहा है, जिसने इस नाटकीय महाजनवाद या पूँजीवाद की जड़ खोदकर फेंक दी है, जिसका मूल सद्धान्त यह है क प्रत्येक व्य कत, जो अपने शरीर या दिमाग़ से मेहनत करके कुछ पैदा कर सकता है, राज्य और समाज का परम सम्मानित सदस्य हो सकता है, और जो केवल दूसरों की मेहनत या बाप-दादों के जोड़े हुए धन पर रईस बना फरता है, वह पतिततम प्राणी है। उसे राज्य प्रबन्ध में राय देने का हक नहीं और वह नागरिकता के अ धकारों का भी पात्र नहीं। महाजन इस नई लहर से अति उद् वग्न होकर बौखलाया हुआ फर रहा है और सारी दुनिया के महाजनों की शा मल आवाज उस नई सभ्यता को कोस रही है, उसे शाप दे रही है।’’

उसके राज्य में अब एक पूँजीपति लाखों मज़दूरों का ख़ून पीकर मोटा नहीं हो सकता।

उसे अब यह आज़ादी नहीं क अपने नफ़े के लए साधारण आवश्यकता की वस्तुओं के दाम चढ़ा सके, अपने माल की खपत कराने के लए युद्ध करा दे, गोला-बारूद और युद्ध सामग्री बनाकर दुर्बल राष्ट्रों का दमन कराये।

अगर इसकी स्वाधीनता ही स्वाधीनता का अर्थ है क यह जनसाधारण को हवादार मकान, पुष्टिकर भोजन, साफ-सुथरे गाँव, मनोरंजन और व्यवसाय की सु वधाएँ, बिजली के पंखे और रोशनी, सस्ता और सुलभ न्याय की प्राप्ति हो, तो इस समाज-व्यवस्था में जो स्वाधीनता और आज़ादी है, वह दुनिया की कसी सभ्यतम कहाने वाली जाति को भी सुलभ नहीं है।

धर्म की स्वतंत्रता का अर्थ अगर पुरोहितों, पादरियों, मुल्लाओं की मुफ्तखोर ज़मात के दंभमय उपदेशों और अन्ध वश्वास-जनित रूढ़ियों का अनुसरण है, तो निस्संदेह वहाँ इस स्वातन्त्र्य का अभाव है;

पर धर्म-स्वातन्त्र्य का अर्थ यदि लोक-सेवा, सहिष्णुता, समाज के लए व्य कत का ब लदान, नैकनीयती, शरीर और मन की प वत्रता है, तो इस सभ्यता में धर्माचरण की जो स्वाधीनता है, और कसी देश को उसके दर्शन भी नहीं हो सकते।

प्रेमचंद आश्वस्त हैं कि जो साम्यवादी सभ्यता पश्चिम में उदित हुई है उसका भारत जैसे देशों पर भी असर पड़ेगा और यहां दलित दमित और आर्थिक रूप से विपन्न व्यक्ति को भी देश का गौरवशाली नागरिक होने का गौरव मिलेगा।

जिसमें राज्य के तमाम संसाधनों का बंटवारा देश के सभी नागरिकों में समान रूप से हो जाएगा।

धन्य है वह सभ्यता, जो मालदारी और व्यक्तिगत संपत्ति का अन्त कर रही है, और जल्दी या देर से दुनिया उसका पदानुसरण अवश्य करेगी। यह सभ्यता अमुक देश की समाज-रचना अथवा धर्म-मजहब से मेल नहीं खाती या उस वातावरण के अनुकूल नहीं है-यह तर्क नितान्त असंगत है। ईसाई मजहब का पौधा यरूशलम में उगा और सारी दुनिया उसके सौरभ से बस गई। बौद्ध-धर्म ने उत्तर भारत में जन्म ग्रहण कया और आधी दुनिया ने उसे गुरुद क्षणा दी। मानव-स्वभाव अ खल वश्व में एक ही है। छोटी-मोटी बातों में अन्तर हो सकता है; पर मूलस्वरूप की दृष्टि से सम्पूर्ण जाति में कोई भेद नहीं। जो शासन- वधान और समाज - व्यवस्था एक देश के लए कल्याणकारी है, वह दूसरे देशों के लए भी हितकारी होगी। हाँ, महाजनी सभ्यता और उसके गुर्गे अपनी शक्ति भर उसका वरोध करेंगे, उसके बारे में भ्रमजनक बातों का प्रचार करेंगे, जन-साधारण को बहकावेंगे, उनकी आँखों में धूल झोकेंगे; पर जो सत्य है एक न एक दिन उसकी वजय होगी और अवश्य होगी।

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं -

- मुंशी प्रेमचंद हिन्दी के मूर्धन्य साहित्यकारों में परिगणित किए जाते हैं।
- 'महाजनी सभ्यता' उनका पूंजीवाद को लेकर लिखा गया एक अति महत्त्वपूर्ण निबंध है।
- 'महाजनी सभ्यता' निबंध में उन्होंने पूंजीवाद को मानव के लिए सबसे घातक व्यवस्था माना है।
- पूंजीवाद राज्य के संसाधनों का अतार्किक बंटवारा है, जिसमें एक व्यक्ति के पास इतना अधिक धन हो जाता है कि वह मसीहा बनने की कोशिश करता है और दूसरों को मूलभूत आवश्यकताओं को भी लाले पड़ रहते हैं।
- साम्यवाद में राज्य के तमाम संसाधनों पर राज्य का अंकुश होता है तथा जिसको अपनी प्रतिभा के बल पर जितनी जरूरत होती है उसे उतना मिलता है।
- महाजनी सभ्यता व्यक्ति की तमाम नैसर्गिकताएं स्नेह, करुणा, मैत्री, सद्भाव आदि के लिए कोई स्थान नहीं है।
- महाजनी सभ्यता में व्यक्ति के मूल्यांकन का आधार धन ही होता है।
- प्रेमचंद ने प्रगतिशीलता को साहित्यकार का नैसर्गिक गुण कहा है।

धन्यवाद